राजभवन देहरादून में आर्थराइटिस के उपचार एवं बचाव विषय पर आयोजित सेमिनार में माननीय राज्यपाल महोदय का संबोधन

26 जून 2022

जय हिन्द!

आज राजभवन के इस सभागार में आर्थराइटिस के उपचार एवं बचाव विषय पर आयोजित सेमिनार में सम्मिलत कुलपति गण, चिकित्सक, विषय विशेषज्ञ और प्रतिभागी महानुभाव!

मुझे बहुत प्रसन्नता है कि इस राजभवन के इस सभागार में आर्थराइटिस के उपचार एवं बचाव की जानकारी के लिए यह सेमिनार आयोजित किया जा रहा है।

मेरी इच्छा रहती है कि राजभवन सदैव समाज की समस्याओं के निदान के लिए गतिशील रहे और विभिन्न प्रकार के आयोजनों के माध्यम से समस्याओं के समाधान के लिए रास्ते तलाशे और इस दिशा में समय - समय पर विभिन्न गतिविधियों का आयोजक करे।

मुझे खुशी है कि इस दिशा में आज का यह सेमिनार महत्वपूर्ण है जो समाज के प्रति हमारी भागीदारी और हमारी जिम्मेदारियों का आहसास कराने वाला है।

देश में आर्थोराइटिस के रोगियों की तादाद बहुत तेजी से बढ़ रही है और विशेषज्ञों का कहना है कि यह पुरूषो की अपेक्षा महिलाओं को अधिक मात्रा में अपनी चपेट में ले रहा है।

मातृ शक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा और उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के लिए हमे हर संभव प्रयास करने चाहिए ताकि उनके जीवन को स्वस्थ और सुगम बनाया जा सके।

इस दिशा में राज्य के विभिन्न राजकीय एवं निजी विश्वविद्यालयों के आर्थोपेडिक्स विभाग के विभागध्यक्ष, मेडिसिन विभाग के विभागध्यक्ष एवं फिजियोथैरेपी विभाग के डाक्टरों के सहयोग एवं समन्वय से इस सेमिनार का आयोजन लाभदायक सिद्ध होगा।

मै आप सभी को बधाई देता हूँ कि आप सभी के सहयोग से यह सेमिनार अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकेगा।

आर्थराइटिस जिसे आम भाषा में गठिया कहते हैं जो कि जोड़ों में दर्द, जकड़न एवं सूजन के मुख्य लक्षणों वाला है। यह रोग उम्र के छठे दशक में काफी मात्रा में पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं में देखा गया है। गठिया होने पर चलने में परेशानी होती है, तथा शरीर के विभिन्न जोड़ो में दर्द एवं उनके उपयोग में शिथिलता जाती है और जल्दी ही थकान हो जाती है और शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है। भूख में भी कमी आ जाती है, जिस कारण शरीर में खून की कमी याने एनीमिया हो जाता है। इसमें कई बार बुखार भी हो जाता है।

ऐसा इस लिए होता है क्योंकि हमारे जोड़ों में हड्डियों के बीच CAETILAGE DAMAGE होता है जो एक SHOCK ABSORBER की तरह काम करता है। जब किसी कारणवश CARTILAGE DAMAGE हो जाता है तो इसके कारण

जोड आपस मे घिसने लगते हैं, जोड़ो मे खुरदूरापन आ जाता है और रोगी को दर्द का अनुभव होने लगता है।

इसके विभिनन्न प्रकार देखने को मिलते हैं जिनमें RHEUMATOLD ARTHRITIS एक गम्भीर बिमारी का रूप ले लेती है जिसमें अपना शरीर ही जोड़ों को नुकसान पहुॅचाने वाले तत्व का निर्माण करता है, और इसे एक AUTOIMMUNE बिमारी कहा जाता है।

इसी प्रकार सोरियाटिक आर्थराइटिस PSORIATIC ARTHRITIS सोरियासिस नामक चर्म रोग के साथ होती है। इसके साथ ही ओस्टियों आर्थराइटिस उम्र बढ़ने के साथ जोड़ घिसने के कारण होती है। इसी प्रकार से एनकाइलोजिंग स्पोंडिलाइसिस (ANKYLOSING SPONDYLITIS पीठ और शरीर के निचले हिस्से के जोड़ों में होती है।

गाउट - मोनोसोडियम यूरेट (GOUT MONOSODIUM URATE)- क्रिस्टल जोड़ों मे जमा हो जाते हैं, जिससे जोड़ो में विशेषकर पैर के अंगूठे मे दर्द व सूजन होती है।

हम यहां पर जान सकते हैं कि किस प्रकार इस बीमारी की पहचान की जाए और उसके उनुसार निदान किया जाय तो इसके लिए एक्स–रे, सी०बी०सी०- खून की जाँच, इ०एस०आर० सी०आर०पी०, यूरिक एसिड़ , रूमेटॉयड फैक्टर (Rheumatoid Factor). ANA आदि के द्वारा परीक्षण किया जाता है और इसके बचाव के लिए भी कतिपय उपाय विशेषज्ञों द्वारा बताये गये हैं।

मेरा मानना है कि इस बिमारी से बचने के लिए जागरूकता और समय से चिकित्सकीय परामर्श महत्वपूर्ण हो सकता है। इसके लिए विशेषज्ञों की ओर से कुछ सुझाव दिये गये हैं जिन्हे हमें समय रहते पूरा कर लेना चाहिए जिनमें प्रमुख उपाय यह है कि हम अपने वज़न को बढ़ने न दें और बढे़ हुए वजन को कम करें, इसके लिए निरंतर कसरत व फिजियोथेरैपी का सहारा लें साथ ही योग्य चिकित्सक से परामर्श द्वारा दवाएँ, संतुलित आहार लें और सुबह गुनगुने पानी से नहाएँ ये कुछ ऐसे उपाय हैं जो हमें आर्थराईटिस के बारे में थोड़ा बहुति जानकारी देते हैं किन्तु मैं आप सभी चिकित्सकों से अपेक्षा करता हूँ कि आप सभी इस प्रकार के असाध्य रोगों के निदान के लिए लोगों को जागरूक बनाने के लिए सेमिनार, संगोष्ठियां और जानजागरूपकता कैम्प लगा कर अपने निकटतम जनमानस और श्रोताओं को लाभान्वित करनें में योगदान दें।